विचार बिन्दु

व्यस्त मनुष्य को आंसू बहाने का अवकाश नहीं। –बायरन

.......ताकि कर्मचारियों की सेहत ठीक रहे!

पिछले कुछ समय से हम राजस्थान सरकार की एक योजना के बारे में अनेक अप्रिय ख़बरें पढ़ रहे हैं। ख़बरें इस आशय की कि इस योजना के लाभार्थियों और सेवा प्रदाताओं ने अनेक प्रकार के घपले किए और सरकार को उन पर कार्रवाई करनी पड़ी। ख़बरें इस आशय की कि अनेक निजी अस्पतालों ने अलग-अलग कारणों से इस योजना के तहत अपनी सेवाएं देने से मना कर दिया या सेवाओं को सीमित कर दिया, वगैरह। मेरे लिखे बिना भी हमारे अधिकांश पाठक समझ गए होंगे कि मैं किस योजना की बात कर रहा हूं। यह योजना है आरजीएचएस (RGHS) अर्थात राजस्थान गवर्नमेंट हेल्थ स्कीम। पिछली अशोक गहलोत सरकार ने सन् 2021 में यह योजना प्रारंभ की थी और इस योजना को सभी ने, विशेष रूप से इसके लाभार्थियों ने खूब सराहा था। इस योजना के तहत राजस्थान सरकार के सेवारत और सेवानिवृत्त कर्मचारियों, उनके परिवारजन, अखिल भारतीय सेवाओं के सेवारत और सेवानिवृत्त अधिकारीगण, राज्य की स्वायत्तशाषी संस्थाओं जिनमें विभिन्न बोर्ड व निगम भी शामिल हैं, के सेवारत और सेवानिवृत्त कर्मचारी और राज्य के न्यायाधीश व पूर्व न्यायाधीशों आदि को एक कार्ड ज़ारी कर विभिन्न अस्पतालों में बिना भुगतान किए (कैशलेस) चिकित्सा, जांचों और दवाओं की सुविधा प्रदान की गई। इस योजना के लागू होने से पहले राज्य में इन अलग-अलग श्रेणी के लोगों के लिए अलग-अलग योजनाएं चल रही थी। सरकार ने एक नेक इरादे के साथ उन सारी योजनाओं को केंद्र सरकार की सीजीएचएस (CGHS) योजना की तर्ज़ पर समेकित कर इन सबको बिना भुगतान के चिकित्सा सुविधा आदि सुलभ करने की यह योजना लागू की। इस योजना की अनेक बारीक बातें भी थीं, सभी लाभार्थियों के लिए अलग-अलग तरह की सुविधाएं थी। उस विस्तार में हम नहीं जाएंगे।

प्रारंभ में यह योजना सरकारी अस्पतालों में सुलभ थी लेकिन बाद में इसे सूचीबद्ध निजी अस्पतालों में भी सुलभ करा दिया गया। सरकारी जानकारी के आधार पर इस योजना में कुल तेरह लाख तेईस हज़ार लोग पंजीकृत हैं और उनके परिवारजन की कुल संख्या सैंतीस लाख बीस हज़ार है। राजस्थान में एक हज़ार सात सौ अठारह और राजस्थान से बाहर चालीस अस्पताल इस योजना के तहत सूचीबद्ध हैं। राजस्थान में दवा की चार हज़ार आठ सौ चौवन दुकानें इस योजना के तहत बिना पैसे चुकाए दवा देने के लिए सूचीबद्ध हैं। इन आंकडों में थोड़ा बहुत अंतर हो सकता है, लेकिन इनसे इस योजना की व्यापकता का अनुमान लगाया जा सकता है। सन् 2021 से पहले भी इन लाभार्थियों में से अधिकांश के लिए राजस्थान सरकार की तरफ से चिकित्सा सुविधा उपलब्ध थी लेकिन तब इन्हें भुगतान करना होता था और बाद में उसका पुनर्भरण होता था। पुनर्भरण में अनेक अड़चनें भी आती थीं और विलंब तो आम था। सबसे बड़ा संकट तो बीमार होते ही अपनी जेब से पैसे खर्च करने का था। ऐसे में यह कैशलेस सुविधा सारे लाभार्थियों को और विशेष रूप से राज्य सरकार के कर्मचारियों व पेंशनरों को एक वरदान लगी।

इस योजना की विशालता का अनुमान कुछ तथ्यों से लगाया जा सकता है। लगभग आठ करोड़ की कुल आबादी वाले राजस्थान के लगभग तेरह लाख लाभार्थियों ने इस योजना के तहत 2021 से 2025 तक दो करोड़ बार ओपीडी (OPD) की सेवाएं ली और उन्नीस लाख से कुछ ज़्यादा बार आईपीडी (IPD) या डे केयर की सेवाएं ली। बड़े लोगों की बात न भी करें तो इसे स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए कि अल्प वेतनभोगी कर्मचारियों, सेवानिवृत्त कर्मचारियों और फेमिली पेंशन पाने वालों के लिए यह योजना सही अर्थों में जीवन रक्षक साबित हुई है। लगातार बढ़ती जा रही महंगाई और बहुत द्रुत गति से महंगी होती जा रही चिकित्सा सुविधाओं के इस समय में और ख़ास तौर पर तब जब कि हमारे अधिकांश सरकारी अस्पताल रोगियों की भीड़, कार्मिकों व बजट की कमी और कुल मिलाकर सरकारी उपेक्षा की वजह से विश्वसनीय नहीं रह गए हैं, निजी अस्पतालों में कैशलेस सुविधा का मिल जाना बहुत बड़ी राहत की बात लगी। जीवन के कीमती साल सरकारी नौकरी को समर्पित कर चुकने के बाद पेंशन के भरोसे जीवन यापन करने वाले कर्मचारी को या उसके दिवंगत हो जाने पर उसके आश्रितों को चिकित्सा सुविधा के लिए निश्चिंत कर निश्चय ही सरकार ने एक सराहनीय काम किया। मैं बार-बार कर्मचारियों की ही बात कर रहा हूं, इसका कारण सर्व विदित है। यही देखें कि जनप्रतिनिधिगण एक अलग ही श्रेणी है और उन्हें वह सब सहजता से सुलभ रहता है जिसका हम सपना भी नहीं देख पाते हैं।

कुल मिलाकर यह सभी सम्बद्ध पक्षों का साझा दायित्व है कि इस योजना को सुचारु रूप से चलाने में सहयोग करें। एक ऐसे समय में जब चिकित्सा सेवाएं महंगी होती-होती बहुतों की पहुंच से बाहर हो गई हैं, स्वास्थ्य बीमा कम्पनियां भारी प्रीमियम लेकर भी ज़रूरत पर काम आने के मामले में कोताही बरतने लगी हैं और सरकार ने उनकी नाजायज़ हरकतों की तरफ से आंखें मूंद रखी हैं, कर्मचारियों का एकमात्र सहारा यह आरजीएएचएस योजना ही है और इसे ठीक से चलाया जाना बहुत ज़रूरी है।

तो यह एक बेहतरीन योजना थी लेकिन शुरु होने के चार बरस बीतते-बीतते बल्कि इससे थोड़ा पहले से इस योजना को लेकर अनेक अप्रिय समाचार आने लगे थे। सबसे पहले तो इस आशय की ख़बरें आई कि बहुत सारे सूचीबद्ध निजी अस्पतालों ने इस योजना के लाभार्थियों को सेवाएं देने में कई किस्म के अडंगे लगाए। फिर यह कि कई निजी अस्पतालों ने अचानक यह कहते हुए सेवाएं देना बंद कर दिया कि सरकार ने लम्बे समय से उनके बिलों का भुगतान नहीं किया है। ऐसा ही अनेक सूचीबद्ध दवा विक्रेताओं ने भी किया। इन कारणों से योजना के लाभार्थियों को अनेक असुविधाओं का सामना करना पड़ा। आप बीमार हैं और आपके पास इतने पैसे नहीं हैं कि अस्पताल का भारी बिल चुका सकें और दवाओं पर बड़ी रकम खर्च कर सकें तो परेशानी तो होगी ही। इसके बाद इस आशय की ख़बरें आई कि योजना का दुरुपयोग करने में कर्मचारी, अस्पताल, दवा विक्रेता और चिकित्सक सभी शामिल रहे हैं। अनेक कर्मचारियों ने अपने कार्ड पर किसी अनधिकृत व्यक्ति का इलाज करवा लिया तो बहुत सारे मामले ऐसे भी सामने आए कि डॉक्टर ने बहुत ज़्यादा दवाएं लिख दीं और मरीज़ ने दवा विक्रेता से मिली भगत कर उन दवाओं की बजाय अन्य सामग्री ले ली। रोगी को बिना भर्ती किए ही अस्पताल ने बिल बना कर सरकार को पेश कर दिया, या अनावश्यक जांचों का भुगतान प्राप्त कर लिया गया। सरकार ने अपने स्तर पर इस तरह के दुरुपयोग को रोकने के लिए अपनी व्यवस्थाओं को और अधिक कड़ा भी किया, और जो लोग, चाहे वे लाभार्थी हों, दवा विक्रेता हों, डॉक्टर हों या अस्पताल प्रबंधक हों, ग़लत काम करते हुए पकड़े गए उनके खिलाफ़ समुचित कार्रवाई भी की। लेकिन लाभार्थी इस बेहतरीन योजना से जिस आश्वस्ति और सुविधा की आस लगाए हुए थे, वह आस पूरी नहीं हो सकी। इसकी सबसे बड़ी वजह तो यही है कि सरकार अस्पतालों व दवा विक्रेताओं को समय पर भुगतान नहीं करती है। प्रतीक्षा करते-करते उनका धैर्य चुक जाता है और थक हार कर वे अपनी सेवाएं देना बंद कर देते हैं। इसका सीधा असर लाभार्थियों पर और ख़ास तौर पर अल्प वेतन भोगी कर्मचारी या उसके आश्रितों पर पड़ता है। सरकार के काम करने की अपनी गति होती है। वह सरक-सरक कर चलती है जबकि बीमारी किसी को अपने आगोश में लेने के लिए इस बात का ध्यान कहां रख पाती है कि सब कुछ ठीक हो तभी वह अपना काम करे।

निश्चय ही किसी भी योजना का दुरुपयोग नहीं होना चाहिए। आदर्श स्थिति तो यही है कि कोई भी- लाभार्थी या सेवा प्रदाता- उसका दुरुपयोग न करे। लेकिन आदर्श स्थिति तो केवल किताबों में होती है। जीवन में कहीं भी आदर्श स्थिति देखने को नहीं मिलती है। मौका मिलने भर की देर होती है, घपला हो जाता है। ऐसे में सरकार की कड़ाई और ग़लत काम करने वाले को दंड का ही सहारा रह जाता है। और मुझे यह स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं है कि सरकार अपनी तरह से इस स्कीम को फुलप्रूफ बनाने के लिए भरपूर प्रयास कर रही है। अनेक बदलाव उसने किए हैं और जैसे-जैसे नए मामले सामने आते जाएंगे, वह उनसे सबक लेकर अपनी व्यवस्था को बेहतर बनाएगी। मैं सरकार से यह उम्मीद करता हूं कि वह एक समय सीमा तयकरे जिसमें अस्पतालों व दवा विक्रेताओं का भुगतान हर हालत में हो जाए। और अगर न हो तो सम्बद्ध कार्मिक को इसके लिए दंडित किया जाए ताकि इस तरह के मामलों की पुनरावृत्ति न हो। इसी तरह अगर कोई अस्पताल या दवा विक्रेता योजना के लाभार्थी को सेवा प्रदान करने में आनाकानी करे या उसे परेशान करे तो उसके खिलाफ़ भी त्वरित कार्रवाई होनी चाहिए। ये जो बहुत सारे अस्पताल मनमर्ज़ी से योजना का क्रियान्वयन रोक देते हैं इस पर नियंत्रण किया जाना चाहिए। ख़ुद सरकारी कर्मचारियों (और अन्य लाभार्थियों) से भी यह अपेक्षा की जानी चाहिए कि वे इस योजना का दुरुपयोग न करें। ऐसा करना ख़ुद उनके ही हितों को आहत करता है। कुल मिलाकर यह सभी सम्बद्ध पक्षों का साझा दायित्व है कि इस योजना को सुचारु रूप से चलाने में सहयोग करें। एक ऐसे समय में जब चिकित्सा सेवाएं महंगी होती-होती बहुतों की पहुंच से बाहर हो गई हैं, स्वास्थ्य बीमा कम्पनियां भारी प्रीमियम लेकर भी ज़रूरत पर काम आने के मामले में कोताही बरतने लगी हैं और सरकार ने उनकी नाजायज़ हरकतों की तरफ से आंखें मूंद रखी हैं, कर्मचारियों का एकमात्र सहारा यह आरजीएएचएस योजना ही है और इसे ठीक से चलाया जाना बहुत ज़रूरी है।

–अतिथि संपादक,
दुर्गाप्रसाद अग्रवाल,
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

भारत को बहुत सावधानी रखनी होगी बहुध्रुवीय विश्व में

सुरेन्द्र सिंह शेखावत

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में, जहां महाशक्तियों के बीच प्रतिस्पर्धा चरम पर है, भारत की विदेश नीति एक निर्णायक मोड़ पर पहुंच चुकी है। डोनाल्ड ट्रंप के 2024 चुनाव में पुन: जीतने पर भारतीय अखबारों द्वारा व्यक्त की गई भारी खुशी से लेकर ट्रंप द्वारा भारत पर लगाए गए 50 प्रतिशत टैरिफ, पहलगाम आतंकी हमले के बाद अमेरिका का पाकिस्तान की ओर झुकाव, पाकिस्तानी सेना प्रमुख जनरल असिम मुनीर को ट्रंप द्वारा लंच पर आमंत्रित करना, शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) समिट में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग और रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के साथ बढ़ती निकटता, भारत-चीन-रूस का उभरता गठबंधन तथा नया विश्व क्रम-ये सभी घटनाएं भारत की विदेश नीति में गहन बदलाव को रेखांकित करती हैं। इन घटनाओं का विश्लेषण करते पर समझा जा सकता है कि कैसे भारत रणनीतिक स्वायत्तता और बहु-संरेखण की नीति अपनाकर वैश्विक चुनौतियों का सामना कर रहा है। ट्रंप की 2024 चुनाव में जीत ने भारतीय मीडिया में उत्साह की लहर दौड़ा दी। प्रधानमंत्री मोदी ने ट्रंप को सबसे पहले बधाई दी और उन्हें दुनिया का सबसे अच्छा नेता कहा। भारतीय मीडिया ने ट्रंप की जीत को भारत के लिए अवसर के रूप में चित्रित किया। हालांकि, यह खुशी क्षणिक साबित हुई, क्योंकि ट्रंप ने रूसी तेल और हथियारों की खरीद का बहाना बनाकर भारत पर 50 प्रतिशत टैरिफ थोप दिए, ट्रंप ने इसे एकतरफा आपदा करार दिया और कहा कि भारत अमेरिकी सामानों पर टैरिफ कम करे। इस कदम ने भारत-अमेरिका संबंधों में दरार पैदा की और भारत को अपनी अर्थव्यवस्था की रक्षा के लिए वैकल्पिक साझेदारों की ओर मोड़ दिया। मोदी सरकार ने आत्मनिर्भर भारत पर जोर देते हुए इन टैरिफों को चुनौती दी, लेकिन इससे स्पष्ट हो गया कि अमेरिका के साथ निर्भरता जोखिमपूर्ण है।

इसके बाद, अप्रैल 2025 में पहलगाम आतंकी हमले ने दक्षिण एशिया में तनाव बढ़ा दिया। ट्रंप प्रशासन ने हमले की निंदा की और टीआरएफ को आतंकी संगठन घोषित किया, लेकिन अमेरिका का पाकिस्तानी के प्रति सॉफ्ट कार्नर जाहिर हुआ। यह झुकाव अफगानिस्तान और मध्य एशिया में अमेरिकी हितों से जुड़ा था, जहां पाकिस्तान की भूमिका महत्वपूर्ण है। भारत के लिए यह एक झटका था, क्योंकि यह पुलवामा हमले के वक्त अमेरिकी भूमिका संदिग्ध ही दिखाई। । अब ट्रंप की नीति ने भारत को अमेरिका पर कम भरोसा करने के लिए मजबूर किया।

इस संदर्भ में, जून 2025 में ट्रंप द्वारा पाकिस्तानी सेना प्रमुख जनरल असिम मुनीर को व्हाइट हाउस में लंच पर आमंत्रित करना एक चौंकाने वाला कदम था। ट्रंप ने मुनीर की प्रशंसा की और इसे रणनीतिक रोमांस कहा, जबकि भारत के साथ तनाव चरम पर था। अगस्त में मुनीर की दूसरी यात्रा ने अमेरिका-पाकिस्तान संबंधों को मजबूत किया। इससे भारत की विदेश नीति में बदलाव आया, जहां अमेरिका के साथ साझेदारी जारी रखते हुए भी पाकिस्तान मुद्दे पर स्वतंत्र रुख अपनाया गया। इसके विपरीत, अगस्त 2025 में तियानजिन में आयोजित एससीओ समिट ने भारत की विदेश नीति की नई दिशा दिखाई। प्रधानमंत्री मोदी ने शी जिनपिंग से सीमा विवाद सुलझाने की प्रतिबद्धता जताई और पुतिन के साथ हाथ पकड़कर चलते हुए निकटता प्रदर्शित की। मोदी और पुतिन ने कार में साथ यात्रा की, जो ट्रंप के टैरिफ के खिलाफ एकजुटता का संदेश थी। मोदी ने कहा कि रूस और भारत मुश्किल समय में साथ खड़े रहते हैं। यह निकटता भारत-चीन-रूस के उभरते गठबंधन को रेखांकित करती है, जहां एससीओ और ब्रिक्स जैसे मंच अमेरिकी प्रभुत्व के खिलाफ वैकल्पिक व्यवस्था प्रदान करते हैं। भारत रूसी तेल खरीदता रहेगा, जबकि चीन के साथ आर्थिक सहयोग बढ़ाएगा। हालांकि, यह गठबंधन पूर्ण नहीं है; उसका चीन के साथ पिछला अनुभव अच्छा नहीं रहा है।

ये घटनाएं एक नए विश्व क्रम की ओर इशारा करती हैं। 2025 में, विश्व बहुध्रुवीय हो चुका है, जहां अमेरिका का एकध्रुवीय प्रभुत्व कमजोर पड़ रहा है। चीन, रूस और भारत जैसे उभरते ध्रुव वैश्विक अर्थव्यवस्था और सुरक्षा को आकार दे रहे हैं। संसाधन युद्ध, जलवायु संकट और राजनीतिक उठावाद बढ़ रहे हैं, जबकि एससीओ जैसी संस्थाएं बहुपक्षीयता को बढ़ावा दे रही हैं। ट्रंप की अमेरिका फर्स्ट नीति ने इस बदलाव को तेज किया, जिससे भारत जैसे देश वैकल्पिक गठबंधनों की ओर मुड़े।

भारत की बदलती विदेश नीति का मूल अब बहु-संरेखण की ओर है क्योंकि विश्व द्विध्रुवीय नहीं रहा। मोदी युग में, भारत अमेरिका के साथ रक्षा साझेदारी (क्वाड) बढ़ाता है, रूस से हथियार खरीदता है, और चीन के साथ आर्थिक संबंध बनाए रखता है। यह नीति जोखिमों को कम करती है, हालांकि इस राह में चुनौतियां बहुत हैं-सीमा विवाद, पाकिस्तान का मुद्दा और आर्थिक निर्भरता। फिर भी, बहु-संरेखण भारत को वैश्विक मंच पर मजबूत बनाता है, जहां वह स्वतंत्र निर्णय ले सकता है। कुल मिलाकर नए दौर में भारत को किसी गठबंधन का पिछलग्गू बनकर खड़ा रहने की बजाय अपने हित के अनुरूप स्वतंत्र निर्णय लेने होंगे । ड्रेगन द्वारा दिए गए ऐतिहासिक झटकों को भी याद रखना होगा। भारतीय मीडिया को भी अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं पर किसी की जीत पर स्वागत में बिछ जाने की बजाय राष्ट्र प्रथम की नीति पर अपना स्टैंड क्लियर रखना होगा। ट्रंप की जीत पर शुरुआती खुशी से लेकर एससीओ में नई निकटताओं तक, भारत की विदेश नीति में बदलाव साफ नजर आ रहे है । नया विश्व क्रम बहुध्रुवीय है, और भारत इसमें एक प्रमुख खिलाड़ी बनकर उभर रहा है। यह नीति न केवल राष्ट्रीय हितों की रक्षा करती है, बल्कि वैश्विक शांति में योगदान देती है। आने वाले वर्षों में, भारत को इस पथ पर सतर्क रहना होगा, ताकि चुनौतियां अवसरों में बदल सकें।

- डॉ. सुरेंद्रसिंह शेखावत,
(लेखक स्वतंत्र चिंतक हैं।)

क्षमावाणी दिवस : विश्व का एक अद्भुत पर्व

भागचंद जैन

सभी धर्मों का परम् उद्देश्य आत्म कल्याण, मानव कल्याण एवं जीवमात्र का कल्याण है। इन उद्देश्यों की पूर्ति तभी सम्भव है जब हम धर्मानुरूप आचरण करे, लेकिन हम एक सामाजिक प्राणी है। सबके अलग अलग प्रकार के कार्य होते है, आमदनी अलग अलग होती है, विचार भी अलग होते है आदि। इस तरह इन अंतर से मतभेद एवं मनभेद प्रारम्भ होने लगते हैं, जो मानसिक अशांति एवं क्रोध का कारण बनते है एवं कभी कभी विकराल स्थिति पैदा हो जाती है कि पटरी पर लाना मुश्किल हो जाता है। मानव जीवन में यह एक सामान्य प्रक्रिया का अंग है। लेकिन इन सब विपरीत स्थितियों से पार पाने के लिए एक अद्भुत हथियार 'क्षमा' का सहारा प्राप्त है। सभी काय के जीवों में मात्र मनुष्य के पास ही क्षमा का विकल्प होता है। क्षमा में क्षमा मांगना एवं क्षमा करना दोनों ही प्रभावशाली है। जो त्रुटि करता है उसके पास क्षमा मांगने का उपाय रहता है। जानबूझकर की गई त्रुटि में अहम का भाव रहता है, वह क्षम्य नहीं होती है। लेकिन मन की मलीनता दूर कर क्षमा मांगने से जाने अनजाने में की गई त्रुटियों की क्षमा याचना का विकल्प सदैव रहता है एवं बुद्धिमान व्यक्ति इसका उपयोग करते है।

कैसे मनाते है ? :कोई जैसा कर्म करेगा उसे वैसा ही फल मिलेगा। अत: सुखद जीवन हेतु कर्मों की विशुद्धि पर महत्व दिया गया है। जैन धर्म में दशलक्षण धर्म की पालना इसी का अंग है। दश धर्म आत्मा के स्वाभाविक धर्म है। जैन दर्शन में दशलक्षण पर्व के दिनों में दस धर्मो की आराधना करके हम अपने कर्मों की निर्जरा करते है। दशलक्षण धर्म की शुरुआत उत्तम क्षमा धर्म से एवं समापन अश्विन कृष्णा एकम के दिन जिनेन्द्र देव की पूजा पाठ एवं अभिषेक के बाद सभी जिन मंदिरों में सामूहिक रूप से वृहत रूप में, सौहार्दपूर्ण वातावरण में क्षमावाणी पर्व के साथ समापन करते है। इस दिन सभी लोग बिना किसी विकल्प के सहज एवं सरल भाव से जाने अनजाने में हुई गलतियों के लिए एक दूसरे से एवं सामूहिक रूप से क्षमा याचना करते है। सचमुच में यह आत्मिक सुधार का एक अलौकिक त्यौहार है, जिसमें मन, वचन एवं कर्म के संगम से अर्थात अन्तस मन से क्षमा मांगी जाती है एवं क्षमा किया भी जाता है। हम अपने जीवन में कितने ही बुरे कर्म जानबूझ कर करते है और कितने ही हमसे अनजाने में हो जाते है। हमारे कृत्यों के कारण दूसरों का मन आहत हो जाता है। क्षमावाणी पर्व हमे वर्ष में कम से कम एक बार इस पर विचार करने का अवसर देता है, मन में बैर भाव की भावना को दूर करने का अवसर मिलता है।

क्षमा वाणी पर्व क्यों मनाते है ? :- दशलक्षण पर्व के बाद आने वाला क्षमावाणी पर्व इन दस धर्मों के उपदेशों को व्यावहारिक रूप देने का अवसर है। इस पर्व के माध्यम से एक-दूसरे के प्रति मन में पल रहे वैर-भाव, क्रोध और मन की मलीनता को धोने का अवसर हैं। क्षमावाणी पर्व क्षमा धर्म को चर्या में लाकर मूर्तरूप प्रदान करता है। क्षमा धर्म वर्ष में एक बार मनाने का ही त्यौहार नहीं है, यह श्रावकों की दिनचर्या का महत्वपूर्ण अंग है। प्रतिक्रमण के माध्यम से प्रतिदिन किए गए दोषों से मुक्त होने के लिए सभी जीवों से क्षमा याचना की जाती है एवं सभी को क्षमा भी किया जाता है।

क्षमा के गुण :- क्षमा भाव होने मात्र से ही अन्य गुण स्वत: आत्मसात होने लगते है। पर्व बहुत होते है, जिनमें बधाईयां एवं शुभकामनाएं दी जाती है। लेकिन जीवन में एक ऐसा दिन भी आना चाहिए जब हम अपनी आत्मा के बोझ को कुछ हल्का कर सके। अपनी भूलों का प्रायश्चित करना तथा आगे कोई भूल नहीं करना हमारे जीवन पथ पर आगे बढ़ने में सहयोगी होता है। शूरवीर की शक्ति का मापदंड ही क्षमा भावना होती है। क्षमा करना वीरों का आभूषण है। कायर तो प्रतिकार करते है। क्षमा करना एक कुलीन कार्य है, यह एक अन्तस का भाव है। अंत:करण शुद्धि के आकांक्षी इस भाव को अपना सकते है ।

जब हम किसी से क्षमा मांगते है तो दरअसल हम अपने ऊपर ही उपकार करते है। हमारी आत्मा का बोझ हल्का होता है, अन्य व्यक्ति के मन में भी अच्छे भाव उत्पन होते है, इसी तरह आपसी वैमनस्य का अंत होता है।

हमारी संस्कृति कहती है – मित्ती में सव्व भूयेसु, वैर मँझन् ण केणवि। प्राकृत भाषा की इस सूक्ति का अर्थ है सभी जीवों में मैत्री- भाव रहे, कोई किसी से बैर -भाव न रखे। जैन संस्कृति ने इस सूक्ति को हमेशा दोहराया है। भगवान महावीर ने कहा है कि ''कोहो पिई यपणा सई'' अर्थात् क्रोध प्रीति का नाश करता है। क्रोध पर विजय पाने का एक मात्र उपाय क्षमा है। क्षमा से ही जीव को आत्म संतुष्टि एवं मानसिक शांति मिलती है।

क्षमा का प्रभाव :- क्षमापना से वैमनस्य दूर हो जाता है एवं मन हल्का हो जाता है। हम मात्र इस भाव से कई मानसिक एवं शारीरिक बीमारियों से बच सकते है। उदाहरणार्थ क्रोध के भाव से शरीर में कोलेस्ट्रॉल का जमाव होने लगता है। दुर्बल व्यक्ति को ही अत्यधिक क्रोध आता है। अहम, बदले की भावना, क्रोध, ईर्ष्या भाव, गलती न मानना, दूसरे से आगे बढ़ने की इच्छा, अविवेकपूर्ण निर्णय आदि दुर्गुण मात्र क्षमा अपनाने से ही दूर हो सकते है। क्षमा भाव से परिवार में आपसी समन्वय, सद्भावना और एकता बनी रहती है। समाज भाईचारा बना रहता है, विकास की संभावनाएं बनती है। एक दूसरे के प्रतिद्वंदी के बजाय पूरक बनकर सहभागिता जन्म लेती है।क्षमा भाव से हैप्पी हार्मोन्स का श्राव है, जो खुशी का कारण बनता है।

क्षमा सर्वधर्म समन्वय का आधार :-क्षमा अपनाने पर केवल जैन धर्मावलंबियों का ही एकाधिकार नहीं है, तथापि जैन धर्म के शाश्वत सिद्धांतों की अनुपालना करने वाला कोई भी व्यक्ति क्षमावाणी पर्व मना सकता है। क्षमा एक ऐसा आत्मशोधक गुण है, जिसकी सभी को आवश्यकता होती है, क्योंकि मनुष्य को गलतियों का पुतला कहा जाता है। गलती मानना एवं उसमें सुधार करने का सभी को अधिकार होना चाहिए, इसी भावानुरूप उद्देश्य की पूर्ति हेतु क्षमा का उद्भव हुआ है। अन्तस के मूलगुण किसी धर्म -संप्रदाय से बंधे हुए नहीं होते, इसलिए क्षमापर्व सर्व धर्म समन्वय का आधार भी है। वैश्विक स्तर पर सीमा पर मनमुटाव, लड़ाई, मतभेद समाप्त होकर आपसी समन्वय एवं सद्भाव से पूरे विश्व में शांति स्थापित हो सकती है। रूस -यूक्रेन, चीन -ताइवान, इजराइल -फिलिस्तीन, भारत - पाकिस्तान आदि कई देशों के बीच जारी तनाव के बीच युद्ध विराम आसानी से हो सकता है, अभी हाल ही में आर्थिक मोर्चे पर शुरू हुआ टैरिफ वार का भी समाधान हो सकता है एवं विश्व में शांति का मार्ग प्रशस्त हो सकता है। यह विश्व का अनोखा पर्व है, इस पर्व से विश्व की सभी समस्याओं के समाधान का मार्ग बन सकता है।

संकलन-भागचंद जैन
मित्रपुरा
अध्यक्ष अखिल भारतीय
जैन बैंकर्स फोरम जयपुर।

बाढ़ की आपदा में मुख्यमंत्री की राहत बनीं सहारा

ईशा सैनी

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार अतिवृष्टि से प्रभावित क्षेत्रों में तत्परता के साथ हरसंभव राहत प्रदान कर रही है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने अधिकारियों को अतिवृष्टि से प्रभावित क्षेत्रों में संवेदनशीलता एवं तत्परता के साथ नागरिक सुरक्षा से लेकर चिकित्सा सेवाएं, खाद्य सामग्री की उपलब्धता सहित आवश्यक सेवाओं के सुचारू संचालन पर भी विशेष दिशा-निर्देश दिए और इनकी पालना में राज्यभर में बाढ़ में फंसे लोगों का पेशेवर ढ़ंग से बचाव कर बहुमूल्य मानव जीवन बचाये गये, प्रभावितों को समुचित सहायता और राहत दी गई।

मुख्यमंत्री के निर्देशानुसार प्रदेश में अतिवृष्टि से प्रभावित क्षेत्रों में राहत और बचाव कार्य युद्ध स्तर पर किए जा रहे हैं। आम जनता की सुरक्षा के लिए सरकार ने कई एहतियाती कदम उठाए हैं। दुर्घटना संभावित स्थानों पर सूचना बोर्ड लगाए जा रहे हैं और नागरिकों को जागरूक किया जा रहा है। राज्य स्तरीय कंट्रोल रूम का टोल फ्री नंबर 1070 और जिला स्तरीय कंट्रोल रूम का टोल फ्री नंबर 1077 लगातार सक्रिय हैं। एनडीआरएफ, एसडीआरएफ और सिविल डिफेंस की टीमें दिन-रात सक्रिय रहकर प्रभावित क्षेत्रों में लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित कर रही हैं। मानसून के दौरान एनडीआरएफ, एसडीआरएफ और सिविल डिफेंस की टीमों ने अब तक 1155 व्यक्तियों को सकुशल रेस्क्यू किया है। वर्तमान में पूरे राज्य में एसडीआरएफ की 62 टीमें, एनडीआरएफ की 7 टीमें और सिविल डिफेंस की टीमें सक्रिय रूप से कार्यरत हैं। वायुसेना के हेलिकॉप्टर से जलमग्न क्षेत्रों से लोगों को एयरलिफ्ट कर सुरक्षित आश्रय तक पहुंचाया भी जा रहा है। राहत शिविरों में भोजन, स्वच्छ जल और दवाइयों की व्यवस्था सुनिश्चित की जा रही है। प्रदेश में खरीफ 2025 में अतिवृष्टि से हुए फसल नुकसान के आकलन के लिए 1 अगस्त, 2025 से गिरदावरी का कार्य प्रारम्भ किया गया। गिरदावरी के कार्य उपरांत जिन जिलों में 33 प्रतिशत या इससे अधिक फसल खराब हुई है, वहां प्रभावित किसानों को केन्द्र सरकार के एसडीआरएफ नॉर्म्स के अनुसार कृषि आदान-अनुदान सहायता राशि उपलब्ध कराई जाएगी। जिला प्रशासन द्वारा विद्यालयों और आंगनबाड़ी भवनों की सुरक्षा को सर्वाच्च प्राथमिकता देते हुए वर्षाजनित परिस्थितियों के चलते घोषित अवकाश के दौरान भवनों का निरीक्षण, जल निकासी और आवश्यक मरम्मत का कार्य तुरंत पूरा करवाया जा रहा है ताकि बच्चों की सुरक्षा हर हाल में सुनिश्चित की जा सके।

राज्य सरकार द्वारा क्षतिग्रस्त सार्वजनिक परिसंपत्तियों की मरम्मत हेतु एसडीआरएफ नॉर्म्स के अंतर्गत विभिन्न जिलों से मरम्मत कार्यों के प्रस्ताव प्राप्त किए गए हैं। इन कार्यों में सड़क, पुल, विद्यालय भवन, आंगनबाड़ी केंद्र और स्वास्थ्य संस्थानों की मरम्मत एवं पुनर्निर्माण के कार्य शामिल हैं। प्रदेश के 12 जिलों में अब तक 180.67 करोड़ रुपए के 8,867 कार्य स्वीकृत किए जा चुके हैं। इनमें 4,183 विद्यालय भवनों के लिए 83.66 करोड़ रुपए, 930 आंगनबाड़ी भवनों के लिए 21.89 करोड़ रुपए, 165 पंचायत भवनों के लिए 3.57 करोड़ रुपए, 106 चिकित्सालय भवनों के लिए 2.08 करोड़ रुपए, 170 लघु सिंचाई योजनाओं के लिए 3.94 करोड़ रुपए, 3,128 सड़कों के लिए 64.34 करोड़ रुपए और 184 पुलों व पुलियाओं के लिए 1.14 करोड़ रुपए की स्वीकृति दी गई है। इसी तरह, राज्य सरकार ने वित्तीय वर्ष 2025-26 में सभी जिलों को बचाव उपकरणों के लिए 19.45 करोड़ रुपए की स्वीकृति दी है। सभी संभागीय मुख्यालय वाले जिलों को 20-20 लाख रुपए तथा अन्य जिलों को 10-10 लाख रुपए की राशि प्रदान की गई। साथ ही, अतिवृष्टि के दौरान जिलों की मांग के अनुसार अतिरिक्त आवंटन किए जा रहे हैं।

राज्य में दक्षिण-पश्चिमी मानसून में अब तक वास्तविक वर्षा 608.65 मिमी रही, जो सामान्य से 62.50 प्रतिशत अधिक है। इस अवधि में प्रदेश के 22 जिलों में वर्षा असामान्य श्रेणी में दर्ज की गई, जिनमें अजमेर, बूंदी, कोटा, टोंक, नागौर, सवाई माधोपुर, सीकर, धौलपुर, श्रीगंगानगर, जयपुर, जोधपुर और करौली जैसे जिले प्रमुख रूप से शामिल हैं।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने प्रदेशवासियों से अपील की है कि वे मौसम विभाग और प्रशासन के निर्देशों का पालन करें, बहते हुए पानी और जलाशयों के निकट न जाएं, अपना आकलन लगाकर पानी से भरे रास्तों को पार करने का प्रयास न करें और किसी भी आपात स्थिति में नियंत्रण कक्ष से तुरंत संपर्क करें। प्रशासन की टीमें सजग और तत्पर हैं।

ईशा सैनी, एपीआरओ,
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग,
राजस्थान

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 8 सितम्बर, 2025

आश्विन मास, कृष्ण पक्ष, प्रतिपदा तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2082, पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र रात्रि 8:03 तक, धृति योग प्रात: 6:30 तक, बालव करण दिन 10:25 तक, चन्द्रमा दिन 2:19 से मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-कुम्भ, मंगल-कन्या, बुध-सिंह, गुरू-मिथुन, शुक्र-कर्क, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज कुमार योग सूर्योदय से रात्रि 8:03 तक है। आज से पितृ पक्ष महालय श्राद्ध आरम्भ होंगे। आज प्रतिपदा का श्राद्ध है। आज क्षमावाणि पर्व-पड़वा ढोक (जैन) है। आज पंचक है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:46 तक, शुभ 9:14 से 10:52 तक, चर 1:58 से 3:31 तक, लाभ-अमृत 3:31 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 6:13, सूर्यास्त 6:35

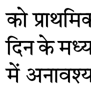

मेष
अपने अति आवश्यक आर्थिक/वित्तीय मामलों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। दिन के मध्यान्ह पश्चात आर्थिक मामलों में अनावश्यक धन खर्च होगा।

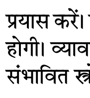

वृष
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा।

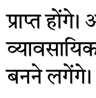

मिथुन
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

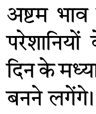

कर्क
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। व्यक्तिगत परेशानियों के कारण भागदौड़ रहेगी। दिन के मध्यान्ह पश्चात अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

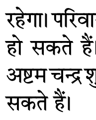

सिंह
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। दिन के मध्यान्ह पश्चात अष्टम चन्द्र शुभ नहीं है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

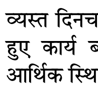

कन्या
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

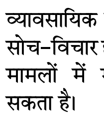

तुला
व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। व्यावसायिक मामलों में महत्वपूर्ण परामर्श मिल सकता है।

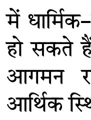

वृश्चिक
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। आज व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

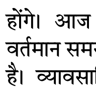

धनु
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। आज परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

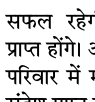

मकर
व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

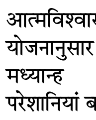

कुंभ
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। दिन के मध्यान्ह पश्चात व्यावसायिक परेशानियां बनी रहेगी।

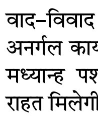

मीन
घर-गृहस्थी के खर्चों पर नियंत्रण रखें। परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा। समय अनर्गल कार्यों में खराब होगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात मानसिक तनाव से राहत मिलेगी।